# आंगनवाड़ी केन्द्रों पर उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन

## अध्ययन प्रतिवेदन

(अवधि माह जनवरी, फरवरी व मार्च, 2009)

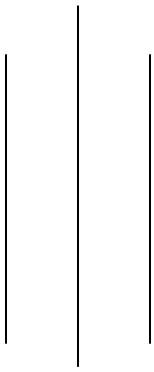


**मध्य स्तरीय प्रशिक्षण केन्द्र (एम.एल.टी.सी.)**

दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्राम्य विकास संस्थान,
बख्शी का तालाब, लखनऊ

# विषय सूची


| क्रमांक | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 01.0 | आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम से परिचय | 1 |
| 02.0 | आई0सी0डी0एस0 के उददेश्य | 1 |
| 03.0 | आई0सी0डी0एस0 की सेवायें | 1 |
| 04.0 | लक्ष्य समूह | 2 |
| 05.0 | आई.सी.डी.एस. (चतुर्थ चरण) की प्राथमिकताएं | 2 |
| 06.0 | अध्ययन की आवश्यकता | 2 |
| 07.0 | अध्ययन के उददेश्य | 2–3 |
| 08.0 | अध्ययन पद्धति | 3 |
| 09.0 | न्यादर्श (सैम्पिल का आकार) | 3–4 |
| 10.0 | केन्द्रों के आवंटन की स्थति | 4 |
| 11.0 | सूचनाओं एवं आंकड़ो का विश्लेषण | 4–7 |
| 12.0 | निष्कर्ष | 8 |
| 13.0 | सुझाव | 9 |
| 14.0 | प्रतिभागियों की सूची | 10–13 |

# आंगनवाड़ी केन्द्रों पर उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन

## 1.0 आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम से परिचय

समेकित बाल विकास सेवा (आई0सी0डी0एस0) कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। यह देश का सबसे बड़ा और बहुआयामी कार्यक्रम है। इसकी शुरूआत 2 अक्टूबर 1975 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 106वें जन्म दिवस पर की गई। प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल और विकास के लिए यह एक अनूठा कार्यक्रम है। इसमें बहुत पिछड़े, ग्रामीण शहरी और जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाले छः वर्ष से कम उम्र के बच्चों के विकास के लिए गर्भवती, धात्री माताओं तथा किशोरियों के लिए समेकित सेवायें दी जाती है। यह समुदाय आधारित कार्यक्रम 4200 परियोजनाओं के माध्यम से से किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत देश के लगभग 75 प्रतिशत सामुदायिक विकास खण्ड और 273 शहरी झोपडपट्टी बस्तियां आती है।

## 2.0 आई0सी0डी0एस0 के उददेश्य

1. छः वर्ष की उम्र तक के बच्चों के स्वास्थ्य तथा पोषण स्थिति में सुधार लाना।
2. बच्चों के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास के लिए उपयुक्त नींव डालना।
3. नवजात शिशु मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर, कुपोषण, रूग्ढ़ता तथा स्कूल छोड़ने वाले बच्चों में कमी लाना।
4. बच्चों के विकास से सम्बन्धित नीतियों एवं कार्यक्रमों में प्रभावी समन्वय स्थापित करना।
5. स्वास्थ्य शिक्षा तथा उपयुक्त पोषाहार द्वारा बच्चों की पोषण आवश्यकता एवं सामान्य स्वास्थ्य देखभाल हेतु माताओं की क्षमता बढ़ाना।

## 3.0 आई0सी0डी0एस0 की सेवायें

1. पूरक पोषाहार
2. टीकाकरण
3. स्वास्थ्य जांच
4. पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा
5. अनौपचारिक शिक्षा (स्कूलपूर्व शिक्षा)
6. संदर्भ सेवायें।

## 4.0 लक्ष्य समूह

- 0–6 माह के बच्चे
- 7 माह से 3 वर्ष के बच्चे
- 3 से 6 वर्ष के बच्चे
- गर्भवती महिलायें
- धात्री महिलायें
- 15–45 वर्ष की महिलायें
- किशोरी बालिकायें।

## 5.0 आई.सी.डी.एस. (चतुर्थ चरण) की प्राथमिकताएं

आई.सी.डी.एस. के इस चरण में कुपोषण तथा शालापूर्व शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इसका मुख्य कारण यही रहा है कि व्यापक सुधारात्मक प्रयासों के बावजूद प्रदेश में पोषण तथा शालापूर्व शिक्षा की प्रगति संतोषजनक नहीं रही है। आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुदृढ़ करनें, कर्मियों की क्षमता विकास करने, व्यवस्थित एवं उत्तरदायित्व पूर्ण सूचना प्रबन्धन पद्धति लागू करने पर बल दिया जा रहा है जिससे आई.सी.डी.एस. की सेवाओं का भरपूर लाभ लक्ष्य समूह को मिल सके। कार्यक्रम की सफलता हेतु कार्यक्रम के प्रति समुदाय की सक्रियता एवं भागीदारी तथा विभिन्न विभागों के ग्राम स्तरीय कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय आवश्यक है। वर्तमान अध्ययन में इन तथ्यों का भी परीक्षण किया गया है जिससे कार्यक्रम को सुव्यवस्थित किया जा सके।

## 6.0 अध्ययन की आवश्यकता

आई0सी0डी0एस0 परियोजना लगभग 33 वर्षो से चल रही है लेकिन अब भी बच्चों की मृत्यु दर व कुपोषण की स्थिति दयनीय है जिनके कारण सामुदायिक सहभागिता न होना, सभी विभागों का आपस में समन्वय न होना साथ ही आंगनवाड़ी केन्द पर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का होना आदि है। इन्हीं कारणों को जानने के लिए अध्ययन किया गया है जिससे आगे चलकर इन स्थितियों में सुधार लाया जा सके और सभी कमियों को दूर किया जा सके।

## 7.0 अध्ययन के उददेश्य

1. आंगनवाड़ी केन्द्र की स्थिति का पता लगाना।
2. आंगनवाड़ी कार्यकत्री तथा सहायिका की उपलब्धता एवं प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में जानकारी करना।

3. आंगनवाड़ी केन्द्रों की सामग्री व रिकार्ड रजिस्टर की उपलब्धता तथा रख–रखाव की स्थिति की जानकारी करना।
4. हाट–कुक की स्थिति का पता लगाना।
5. आंगनवाड़ी केन्द्रों पर आने वाली अन्य समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

## 8.0 अध्ययन पद्धति

उत्तर प्रदेश में चार एम.एल.टी.सी. संचालित किये जा रहे हैं जिसमें से एक एम.एल.टी.सी. राज्य ग्राम्य विकास संस्थान पर चल रहा है जिसके अन्तर्गत मुख्य सेविकाओं को कार्य प्रशिक्षण तथा पुनश्चर्या प्रशिक्षण दिया जाता है। आई.सी.डी.एस. व्यवस्था के अनुसार एक परियोजना में लगभग 6–7 मुख्य सेविका होती है एवं एक मुख्य सेविका के अन्तर्गत लगभग 20–25 केन्द्र होते हैं जिसका वह पर्यवेक्षण करती है और वह केन्द्रों का अच्छी तरह से आंकलन कर सकती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए प्रशिक्षण में आई मुख्य सेविकाओं से तैयार किये गये प्रारूप पर आंगनवाड़ी केन्द्रों से सम्बन्धित सूचनायें एकत्र की गई एवं उनके इन केन्द्रों को सुदृढ़ बनाने के सम्बन्ध में विचार एवं सुझाव भी मांगे गये। एम.एल.टी.सी. पर प्रशिक्षण कार्य निरन्तर चलता रहता है इस कारण प्रशिक्षण के दौरान समय–समय पर संकाय सदस्यों एवं अनुदेशकों द्वारा प्रतिभागियों से सामुहिक चर्चा भी की जाती है इसके माध्यम से भी फीड बैक प्राप्त कर उसका भी विश्लेषण किया गया है।

## 9.0 न्यादर्श (सैम्पिल का आकार)

माह नवम्बर व दिसम्बर, 2008 में चार पुनश्चर्या प्रशिक्षण चलाए गये जिसमें 7 जनपदों (उन्नाव, सीतापुर, रायबरेली, लखनऊ, लखीमपुर, सुल्तानपुर, बाराबंकी,) से कुल 75 मुख्य सेविकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया इनमें 2 मुख्य सेविका को जल्द ही नये केन्द्र मिलें थे इस वजह से उन्हें पूर्ण जानकारी नही थी। इस प्रकार 73 मुख्य सेविकाओं को ही अध्ययन के अन्तर्गत लिया गया। इनके अधिकार क्षेत्र में कुल 2138 केन्द्र कार्यरत हैं। इन केन्द्रों को इस अध्ययन हेतु चयनित किया गया।

संक्षेप में इस अध्ययन हेतु न्यादर्श का आकार निम्न प्रकार से है–

| क्रमांक | प्रशिक्षण अवधि | कुल प्रशिक्षार्थी (मुख्य सेविकाएं) | कुल आच्छादित आंगनवाड़ी केन्द्र |
|---|---|---|---|
| 1 | 07 से 13 नवम्बर, 08 | 22 | 558 |
| 2 | 18 से 24 नवम्बर, 08 | 20 | 534 |
| 3 | 09 से 15 दिसम्बर, 08 | 13 | 342 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4 | 20 से 26 दिसम्बर, 08 | 20 | 704 |
| कुल | | 75 | 2138 |

## 10.0 केन्द्रों के आवंटन की स्थति

आई.सी.डी.एस. के मानकों के अनुसार प्रत्येक मुख्य सेविका को 21 से 25 केन्द्र आवंटित होते हैं। परन्तु अध्ययन प्रपत्र से पता चलता है कि 24 मुख्य सेविकाओं को मानकों के अनुसार केन्द्र प्राप्त हैं। 6 मुख्य सेविकाओं को 20 से कम केन्द्र प्राप्त हैं और 43 को 25 से अधिक केन्द्र प्राप्त हैं, जिनमें से 3 मुख्य सेविकाओं को 50 से अधिक केन्द्र प्राप्त हैं जो मानकों से अधिक है। प्रत्येक मुख्य सेविका को कितने केन्द्र आवंटित किए गये हैं इसका विवरण निम्न तालिका में दशार्या गया है–

| क्र.सं. | केन्द्रों की संख्या | मुख्य सेविकाओं की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | 20 से कम | 6 |
| 2 | 21 से 25 (मानक) | 24 |
| 3 | 26–30 | 21 |
| 4 | 31–35 | 8 |
| 5 | 36–40 | 8 |
| 6 | 41–45 | 1 |
| 7 | 46–50 | 2 |
| 8 | 51–55 | 1 |
| 9 | 56 से ज्यादा | 2 |
| | **योग** | **73** |

## 11.0 सूचनाओं एवं आंकड़ो का विश्लेषण

प्रशिक्षण प्राप्त कर रही मुख्य सेविकाओं से एक निर्धारित प्रारूप पर सूचनायें प्राप्त की गई एवं उनसे विभिन्न बिन्दुओं पर पृथक से विचार विमर्श भी किया गया। सूचनाओं के विश्लेषण से निम्न तथ्य प्रकाश में आये–

### 11.1 केन्द्रों पर स्टाफ की स्थिति

प्रत्येक आंगनवाड़ी केन्द्र पर एक कार्यकत्री और एक सहायिका रखने की व्यवस्था होती है। इस तरह से एक केन्द्र पर दो स्टाफ होते हैं। 2138 केन्द्रों पर कुल 4276 स्टाफ होना चाहिए जबकि

वर्तमान में 4151 स्टाफ नियुक्त हैं जिसमें 2080 कार्यकत्री तथा 2071 सहायिकायें हैं। 58 आंगनवाड़ी कार्यकत्री तथा 67 सहायिका की आवश्यकता है। स्टाफ की स्थिति निम्नवत् है–

| क्रम संख्या | विवरण | वर्तमान संख्या | वंछित संख्या | रिक्त स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 1 | आंगनवाड़ी कार्यकत्री | 2080 | 2138 | 58 |
| 2 | सहायिका संख्या | 2071 | 2138 | 67 |
| | योग | 4151 | 4276 | 125 |

## 11.2 केन्द्रों की संचालन की स्थिति

यह कार्यक्रम विगत कई वर्षो से प्रदेश में संचालित किया जा रहा है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कुल केन्द्रों में से अधिकांश लगभग 78 प्रतिशत केन्द्र प्राइमरी स्कूल में संचालित हो रहे हैं, 11 प्रतिशत केन्द्र सार्वजनिक स्थल पर चल रहे हैं। 3 प्रतिशत केन्द्र कार्यकत्री के घर पर, 3.9 प्रतिशत केन्द्र पंचायत भवन पर और मात्र 5 प्रतिशत केन्द्र निजी भवन में चल रहे हैं। स्थलवार केन्द्रों की स्थिति निम्नवत् है–

| क्र.सं. | स्थलवार केन्द्रों का विवरण | केन्द्र संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|---|
| 1 | प्राईमरी स्कूल | 1664 | 78 |
| 2 | निजी भवन | 98 | 5 |
| 3 | पंचायत भवन | 84 | 4 |
| 4 | कार्यकत्री का घर | 58 | 3 |
| 5 | अन्य स्थल | 234 | 10 |
| | योग | | |

## 11.3 आंगनवाड़ी केन्द्रों पर उपलब्ध सुविधाओं का विवरण

कुल केन्द्रों में से 88 प्रतिशत केन्द्रों में अभिलेख पूर्ण पायें गये हैं जबकि 12 प्रतिशत केन्द्रों में अभिलेख अपूर्ण हैं। 92 प्रतिशत केन्द्रों पर पकाने के बर्तन उपलब्ध नहीं हैं और 67 प्रतिशत केन्द्रों पर खाने के बर्तन उपलब्ध नही हैं। 64 प्रतिशत केन्द्रों पर ही वजन मशीन उपलब्ध है।

शालापूर्व सामग्री की उपलब्धता अच्छी है, केवल 23 प्रतिशत केन्द्रों पर ही सामग्री उपलब्ध नहीं है। केवल 10 प्रतिशत केन्द्रों पर भण्डारण की तथा 5 प्रतिशत केन्द्रों पर रसोई की व्यवस्था है। इससे पता चलता है कि केन्द्रों पर भण्डारण और रसोई की उचित व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त

मात्र 14 प्रतिशत केन्द्रों पर फर्नीचर उपलब्ध है। आंगनवाड़ी केन्द्र पर दी जाने वाली सुविधाओं की स्थिति निम्नांकित तालिका में दर्शायी गई है–

| क्र.सं. | सुविधाओं का विवरण | केन्द्रवार उपलब्धता | | कुल केन्द्र (संख्या) |
|---|---|---|---|---|
| | | हां (प्रतिशत में) | नहीं (प्रतिशतमें) | |
| 1 | अभिलेख | 1873 (88%) | 265 (12%) | 2138 |
| 2 | बर्तन पकाने वाले | 175 (8%) | 1963 (92%) | 2138 |
| 3 | बर्तन खाने वाले | 701 (33%) | 1437 (67%) | 2138 |
| 4 | वजन मशीन | 1358 (64%) | 780 (36%) | 2138 |
| 5 | ग्रोथ चार्ट | 1604 (75%) | 534 (25%) | 2138 |
| 6 | शालापूर्व सामग्री | 1651 (77%) | 487 (23%) | 2138 |
| 7 | भण्डारण | 209 (10%) | 1929 (90%) | 2138 |
| 8 | रसोई | 98 (5%) | 2040 (95%) | 2138 |
| 9 | फर्नीचर | 307 (14%) | 1831 (86%) | 2138 |

## 11.4 हॉट कुक योजना

आई.सी.डी.एस. के अन्तर्गत मई 2007 से हॉट कुक योजना 65 जनपदों की 270 परियोजनाओं के आंगनवाड़ी केन्द्र पर लागू की गई है। इसके अन्तर्गत केन्द्र पर पंजीकृत 3–6 वर्ष के समस्त बच्चों को गरम पूरक पोषाहार केन्द्र द्वारा तैयार कर प्रतिदिन देने के व्यवस्था है साथ ही 6 माह से 3 वर्ष के बच्चों तथा गर्भवती, धात्री महिलाओं को कच्चे माल का टेक होम राशन दिया जाता है।

विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि कुल केन्द्रों में लगभग 68 प्रतिशत केन्द्रों पर ही वर्तमान में हॉट कुक चल रहा है शेष केन्द्रों पर अभी इसकी शुरूआत ही नहीं हुई है। विवरण निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

| क्र.सं. | विवरण | केन्द्रों की संख्या | | कुल केन्द्र |
|---|---|---|---|---|
| | | हां. (%) | नहीं | |
| 1 | हॉट कुक | 1461 (68%) | 677 (32%) | 2138 |

## 11.5 अभिलेखों का प्रबन्धन

आंगनवाड़ी केन्द्र पर लगभग 18 अभिलेख होते हैं। क्षेत्रीय भ्रमण के समय प्रायः यह देखा गया है कि सभी अभिलेख सहीं ढंग से भरे नहीं होते हैं। इस सम्बन्ध में मुख्य सेविका से जानकारी प्राप्त की गई कि कार्यकत्रियों को अभिलेख तैयार करने एवं उन्हें व्यवस्थित रखने हेतु कोई प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। इस सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट नहीं होती है। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पता चलता है कि विभाग द्वारा ऐसा कोई प्रशिक्षण पृथक रूप से आयोजित ही नहीं किया जाता है। आंगनवाड़ी

कार्यकत्रियों को मात्र सामान्य प्रशिक्षण ही दिया जाता है जिसके अन्तर्गत ही अभिलेखों के रख–रखाव की सामान्य जानकारी दी जाती है। इस सन्दर्भ में जो भी जानकारी है वह मुख्य सेविकाओं के द्वारा ही दी जाती है, जो कि अपर्याप्त है।

## 11.6 सामुदायिक सहयोग

आई.सी.डी.एस. की योजना कई विभागों के सहयोग से चल रही है इस कारण जब तक इसमें स्थानीय सहयोग न प्राप्त हो तो इस कार्यक्रम को चलाने में अनेक समस्यायें आती हैं। इस योजना से मुख्यरूप से शिक्षा, स्वास्थ्य और पंचायत आदि विभाग जुड़े हुए है। अध्ययन से पता चलता है कि 84 प्रतिशत केन्द्रों को स्थानीय सहयोग मिल रहा है, मात्र 16 प्रतिशत केन्द्र ऐसे पाये गये हैं जहां इसका अभाव देखने को मिला। सामुदायिक सहयोग तथा विभिन्न विभागों की स्थिति निम्नांकित तालिका में दर्शायी गई है–

| क्र.सं. | विवरण | केन्द्रों की संख्या | | कुल केन्द्र |
|---|---|---|---|---|
| | | हां. (प्रतिशत में) | नहीं (प्रतिशत में) | |
| 1 | स्थानीय सहयोग | 1802 (84%) | 336 (16%) | 2138 |
| 2 | शिक्षा विभाग | 1830 (86%) | 308 (14%) | 2138 |
| 3 | स्वास्थ्य | 2089 (98%) | 49 (2%) | 2138 |
| 4 | पंचायत | 1091 (51%) | 1047 (49%) | 2138 |

## 12.0 निष्कर्ष

- कार्यक्रम को चलते काफी समय हो चुका है किन्तु अभी भी 78 प्रतिशत आंगनवाड़ी केन्द्र प्राइमरी पाठशाला में चलाये जा रहे हैं। अपने निजी भवन न होने के कारण क्षेत्र में योजना का क्रियान्वयन ठीक ढंग से नहीं हो पा रहा है। निजी भवन के अभाव में सामग्री भण्डारण, रसोई, अभिलेख तथा अन्य सामान रखने में असुविधा होती है। यह भी पाया

गया कि एक प्राइमरी स्कूल में 2 से अधिक केन्द्र चलाये जाते है। कुल केन्द्रों में से 1664 केन्द्र प्राईमरी स्कूल में चल रहे हैं जिनमें 112 केन्द्रों में 2 से अधिक केन्द्र चल रहे हैं।

- केन्द्रों की संख्या अधिक होने के कारण मुख्य सेविका सभी केन्द्रों का निरीक्षण दिए गये मानक, समय अंतराल के अनुसार नहीं कर पाती जिससे उन्हें केन्द्रों की वर्तमान स्थिति की सही जानकारी नहीं हो पाती है।
- केन्द्रों पर कार्यकत्री एवं एक सहायिका की व्यवस्था की गई है। यह ज्ञात हुआ कि कुछ केन्द्रों पर केवल कार्यकत्री कार्यरत है और कुछ पर केवल सहायिका ही है। स्टॉफ पूर्ण न होने के कारण केन्द्र का कार्य प्रभावित होता है।
- केन्द्रों पर अभिलेखों के उपलब्धता की स्थिति अच्छी पाई गई है। 88 प्रतिशत केन्द्रों पर अभिलेख पूर्ण रूप से उपलब्ध है। किन्तु अभिलेखों का सत्यापन समय–समय पर नहीं हो पाता है, क्यों कि अधिकांश सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री अभिलेखों को अपने घर पर रखती हैं निजी भवन न होने के कारण।
- केन्द्रों के सफल संचालन हेतु कुछ ससमान/ सुविधाएं पूर्ण से निर्धारित हैं जैसे– वजन मशीन, ग्रोथ चार्ट, भोजन पकाने/परोसने के बर्तन, शालापूर्व सामग्री आदि। अध्ययन से पाया गया कि ज्यादातर केन्द्रों पर इन आधारभूत सुविधाओं की स्थिति अच्छी नहीं है। इसमें सुधार की आवश्यकता है।
- अधिकांश केन्द्रों पर हॉट कुक कार्यक्रम शुरू हो चुका है शेष केन्द्रों पर भी शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायेगा। बर्तन, रसोई व भण्डारण आदि का समुचित व्यवस्था न होने के कारण यह कार्यक्रम भी प्रभावित हो रहा है।
- केन्द्रों पर बच्चों की उपस्थिति कम होती है, जिसका एक कारण है केन्द्र या प्राइमरी स्कूल दूर होता है। दूसरा कारण यह निकल कर आया कि आंगनबाड़ी के जो 3–6 वर्ष के बच्चे हैं, छात्रवृत्ति व मिड डे मील के कारण उनका नामांकन प्राइमरी स्कूल में करवा देते हैं।

## 13.0 सुझाव–

- सभी केन्द्रों पर आंगनवाड़ी कार्यकत्री और सहायिका की उपलब्धता सुनिश्चित किया जाय। साथ ही उनके शैक्षिक योग्यता के आधार पर चयन करना चाहिए।

- मुख्य सेविकाओं को 20 से 25 के मध्य ही केन्द्र देना चाहिए जिससे वे सभी केन्द्रों का निरीक्षण समय–समय पर करती रहे।
- केन्द्र के सभी अभिलेखों के रख–रखाव के लिए आंगनवाड़ी कार्यकत्री को प्रशिक्षित किया जाय। हॉट कुक योजना के लिए अलग से प्रशिक्षण दिया जाय। साथ ही कोई भी नयी योजना शुरू होने से पहले आंगनबाड़ी व मुख्यसेविका को प्रशिक्षण दिया जाय।
- हॉट कुक में प्रति बच्चे के हिसाब से जो दर रखी गई है उसको बढ़ाया जाय या रेडी टू इट पोषाहार दिया जाय।
- कार्यक्रम को विस्तृत पैमाने पर चलाया जा रहा है इसलिए यह नितान्त आवश्यक है कि प्राथमिकता के आधार पर निजी भवनों का निर्माण ऐसी जगह कराया जाय जहां बच्चे आसानी से आ सके या फिर जो केन्द्र प्राइमरी पाठशाला में चल रहे हैं, उनके अतिरिक्त कक्षों की चाबी कार्यकत्री को दी जाय।
- समस्त केन्द्रों पर आधार भूत सुविधायें जैसे– वजन मशीन, ग्रोथ चार्ट, शालापूर्व सामग्री आदि से पूर्ण किया जाय जिससे इस कार्यक्रम के लाभ लक्ष्य समूह को प्राप्त हो सके।
- आंगनवाड़ी केन्द्र व प्राइमरी स्कूल का खुलने का समय एक कर दिया जाय जिससे बड़े बच्चे अपने छोटे भाई–बहनों को साथ ला सके।
- स्वास्थ्य विभाग और आई0सी0डी0एस0 के कार्यकर्ताओं को एक दूसरे के कार्यदायित्व की जानकारी करानी चाहिए जिससे दोनों के बीच समन्वय स्थापित हो सके।
- अत्यधिक गर्मी/सर्दी में 3–6 वर्ष के बच्चों की छुटटी कर टी.एच.आर. वितरण करवाया जाय।

## 14.0 प्रतिभागियों की सूची

| क्र. | प्रतिभागी नाम<br>सर्व सुश्री | परियोजना का नाम | आवंटित आं. वा. केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | शान्ति चन्द्रा | गोसाईगंज – लखनऊ | 24 |
| 2 | प्रीति द्विवेदी | गोसाईगंज – लखनऊ | 24 |
| 3 | माधुरी देवी | गोसाईगंज – लखनऊ | 26 |
| 4 | अन्चला सिन्हा | चिनहट – लखनऊ | 31 |
| 5 | सुजाता शर्मा | चिनहट – लखनऊ | 26 |
| 6 | कान्ती श्रीवास्तव | काकोरी – लखनऊ | 25 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 7 | कु0 मंजू | शिवगढ़ – रायबरेली | 24 |
| 8 | रचना सिंह | ऊंचाहार – रायबरेली | 34 |
| 9 | सीता देवी | जगतपुर – रायबरेली | 29 |
| 10 | रंजना श्रीवास्तव | सिंहपुर – रायबरेली | 24 |
| 11 | कान्ती शुक्ला | डीह – रायबरेली | 19 |
| 12 | आशा बाजपेई | लालगंज –रायबरेली | 25 |
| 13 | प्रगति बाजपेई | असोहा – उन्नाव | 23 |
| 14 | सारिका सिंह | औरास – उन्नाव | 27 |
| 15 | ममता जोशी | औरास – उन्नाव | 29 |
| 16 | प्रेमलता सिंह | सुमेरपुर – उन्नाव | 25 |
| 17 | सुहैला अख्तर | नवाबगंज – उन्नाव | 26 |
| 18 | उमा वर्मन | सुमेरपुर – उन्नाव | 25 |
| 19 | सुधा त्रिवेदी | मछरेहटा – सीतापुर | 26 |
| 20 | मालती वर्मा | मछरेहटा – सीतापुर | 29 |
| 21 | अनीता चौधरी | सिधौली – सीतापुर | 18 |
| 22 | बीना वर्मा | सिधौली – सीतापुर | 19 |
| 23 | उमेश्वरी | शहर – बाराबंकी | 28 |
| 24 | मधु | रामनगर – बाराबंकी | 20 |
| 25 | नमिता सिंह | बंकी – बाराबंकी | 23 |
| 26 | अन्जूलता वर्मा | सिद्धौर– बाराबंकी | 21 |
| 27 | शारदा वर्मा | दरियाबाद– बाराबंकी | 24 |
| 28 | राधा त्रिपाठी | हैदरगढ़ – बाराबंकी | 37 |
| 29 | रंजना श्रीवास्तव | पूरे डलई – बाराबंकी | 24 |
| 30 | अनुराधा | जगदीशपुर – सुल्तानपुर | 25 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 31 | चन्द्रावती | जगदीशपुर – सुल्तानपुर | 27 |
| 32 | शीला देवी | जगदीशपुर – सुल्तानपुर | 25 |
| 33 | चन्द्रावती गुप्ता | वल्दीराय – सुल्तानपुर | 34 |
| 34 | रीतारानी सिंह | वल्दीराय – सुल्तानपुर | 46 |
| 35 | बबिता मिश्रा | ईसानगर –लखीमपुर | 0 |
| 36 | लल्ली सिंह | लखीमपुर–लखीमपुर | 0 |
| 37 | शहाना बेगम | फूल बेहड़ –लखीमपुर | 37 |
| 38 | अन्नपूर्णा अवस्थी | फूल बेहड़ –लखीमपुर | 31 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 39 | मिथिलेश बाजपेई | अमेठी–सुल्तानपुर | 28 |
| 40 | ज्ञानवती मिश्रा | जगदीशपुर–सुल्तानपुर | 26 |
| 41 | सरिता वर्मा | निघासन–खीरी | 33 |
| 42 | माधुरी सिंह | निघासन–खीरी | 40 |
| 43 | उर्मिला मिश्रा | डीह–रायबरेली | 28 |
| 44 | विभा बाजपेई | सिंहपुर – रायबरेली | 24 |
| 45 | सुशीला द्विवेदी | लालगंज – रायबरेली | 25 |
| 46 | बलराम कुमारी | सतांव – रायबरेली | 28 |
| 47 | मृदुलता सिंह | अमांवा – रायबरेली | 23 |
| 48 | मिथलेश कुमारी | सरेनी – रायबरेली | 25 |
| 49 | माया देवी | मियांगंज – उन्नाव | 32 |
| 50 | पन्नावती | बांगरमऊ–उन्नाव | 23 |
| 51 | आशा देवी | बांगरमऊ–उन्नाव | 23 |
| 52 | अजिता शुक्ला | बीघापुर –उन्नाव | 26 |
| 53 | कमललता | नवाबगंज –उन्नाव | 27 |
| 54 | सावित्री देवी | मियांगंज–उन्नाव | 30 |
| 55 | नगमा बेगम | नवाबगंज–उन्नाव | 28 |
| 56 | दीपाली बाजपेई | सिधौली–सीतापुर | 18 |
| 57 | अन्नपूर्णा वर्मा | बेहटा–सीतापुर | 31 |
| 58 | गीता यादव | सिधौली–सीतापुर | 19 |
| 59 | माधुरी सिंह | महमूदाबाद –सीतापुर | 27 |
| 60 | रजनी सिन्हा | कसमण्डा–सीतापुर | 25 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 61 | गीता सिंह | बिसवां –सीतापुर | 49 |
| 62 | नीलम वर्मा | महमूदाबाद–सीातपुर | 21 |
| 63 | मीना सिंह | कादीपुर–सुल्तानपुर | 39 |
| 64 | प्रेमलता वर्मा | शाहगढ़–सुल्तानपुर | 38 |
| 65 | नगीना देवी | जगदीशपुर–सुल्तानपुर | 26 |
| 66 | कंचन यादव | भादर – सुल्तानपुर | 53 |
| 67 | सरस्वती देवी | बाजार शुकुल–सुल्तानुपर | 25 |
| 68 | प्रेमकुमारी | बाजार शुकुल–सुल्तानपुर | 26 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 69 | शशिकान्ती | लखीमपुर–खीरी | 57 |
| 70 | कमलावती | रमिया बेहड़–लखीमपुरखीरी | 40 |
| 71 | राजकुमारी | मितौली–लखीमपुरखीरी | 39 |
| 72 | गंगा देवी | मोहम्मदी–लखीमपुरखीरी | 56 |
| 73 | राजरानी पाल | अखण्डनगर–सुल्तानपुर | 35 |
| 74 | लक्ष्मी देवी | रमिया बेहड़–लखीमपुर | 36 |
| 75 | पुष्पा मिश्रा | बिजवा –लखीमपुर | 44 |

***